❍ 28 / 06 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗अव्यक्त बनने का पुरुषार्थ किया ?∗

➢➢ ∗ज्ञान चिता पर बैठे रहे ?∗

➢➢ ∗सतगुरु द्वारा प्राप्त हुए महामंत्र की चाबी से सर्व प्राप्ति संपन्न स्थिति का अनुभव किया ?∗

➢➢ ∗संगठन के महत्व को जानकर महान स्थिति का अनुभव किया ?∗

──────────────────────────

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ∗ज्वाला स्वरूप याद के लिए मन और बुद्धि दोनों को एक तो पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की भी शक्ति चाहिए।∗ इससे बुद्धि की शक्ति वा कोई भी एनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी। ∗जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी। इसके लिए अब संकल्पों का बिस्तर बन्द करते चलो अर्थात् समेटने की शक्ति धारण करो।∗

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं संगमयुगी हीरे तुल्य श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ सभी अपने को संगमयुगी हीरे तुल्य श्रेष्ठ आत्मा समझते हो? *क्योंकि संगम पर इस समय हीरे तुल्य हो, सतयुग में सोने तुल्य बनेंगे। लेकिन इस समय सारे चक्र के अन्दर श्रेष्ठ आत्मा का पार्ट बजा रहे हो। तो हीरे समान जीवन अर्थात् इतनी अमूल्य जीवन बनी है? सबसे बड़ी मूल्यवान जीवन संगमयुग की है।*

〰✧ तो ऐसी स्मृति रहती है कि इतने श्रेष्ठ हैं? क्योंकि जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति होगी। अगर स्मृति श्रेष्ठ है तो स्थिति साधारण नहीं हो सकती। अगर स्थिति साधारण है तो स्मृति भी साधारण है। *तो सदा सर्वश्रेष्ठ मूल्यवान जीवन अनुभव करने वाली आत्मा हूँ-यह स्मृति में इमर्ज रहे। ऐसे नहीं कि मैं हूँ ही, मालूम है कि हम हीरे तुल्य हैं।* लेकिन स्मृति में इमर्ज रूप में रहता है और उसी स्मृति से, उसी स्थिति से हर कार्य करते हो?

〰✧ क्योंकि हीरे तुल्य जीवन वा हीरे तुल्य स्थिति वाले का हर कर्म हीरे तुल्य होगा अर्थात् मूल्यवान होगा, ऊंचे ते ऊंचा होगा। तो हर कर्म ऐसे ऊंचा रहता है या कभी ऊंचा, कभी साधारण? क्योंकि सदा हीरे तुल्य हो। हीरा तो हीरा ही होता है. वह कभी सोना वा चांदी नहीं बनता। *तो हर कर्म करते हुए चेक

करो कि-हीरे तुल्य स्थिति है, चलते-चलते साधारणता तो नहीं आ गई? क्योंकि 63 जन्म का अभ्यास है साधारण रहने का। तो पिछला संस्कार कभी खींच लेता है। कमजोर को कोई खींच लेगा, बहादुर को कोई खींच नहीं सकता। बहादुर उसको भी चरणों में झुका देगा। तो कभी भी साधारण स्थिति नहीं हो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आज बापदादा रूहानी ड्रिल करा रहे थे। *एक सेकण्ड में संगठित रूप में एक ही वृत्ति द्वारा, वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हैं।*

〰✧ नम्बरवार हरेक इन्डीविजुवल अपने-अपने पुरुषार्थ प्रमाण, महारथी अपने वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल को परविर्तन करते रहते हैं। लेकिन *विश्व परिवर्तन में सम्पूर्ण कार्य की समाप्ति में संगठित रूप की एक ही वृति और वायब्रेशन चाहिए।*

〰✧ थोडी-सी महान आत्माओं के वा तीव्र पुरुषार्थी महारथी बच्चों की वृत्ति व वायब्रशन्स द्वारा कहीं-कहीं सफलता होती भी रहती है लेकिन *अभी अंत में सर्व ब्राह्मण आत्माओं की एक ही वृति की अंगुली चाहिए। एक ही संकल्प की अंगुली चाहिए तब ही बेहद का विश्व परिवर्तन होगा।* वर्तमान समय विशेष अभ्यास इसी बात का चाहिए।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जो बच्चे बाप की याद में रहने वाले हैं, वह विनाश में विनाश नहीं होंगे लेकिन स्वेच्छा से शरीर छोड़ेंगे,* न कि विनाश के सरकमस्टान्सेज़ के बीच में छोड़ेंगे। *इसके लिए एक बुद्धि की लाइन क्लियर हो और दूसरा अशरीरी बनने का अभ्यास बहुत हो।* कोई भी बात हो तो आप अशरीरी हो जाओ। अपने आप शरीर छोड़ने का जब संकल्प होगा तो संकल्प किया और चले जायेंगे। इसके लिए बहुत समय से प्रैक्टिस चाहिए। *जो बहुत समय के स्नेही और सहयोगी रहते हैं।उनको अन्त में मदद ज़रूर मिलती है। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे स्थूल वस्त्र उतार रहे हैं। ऐसे ही शरीर छोड़ देंगे।* सारा दिन में चलते-चलते बीच-बीच में अशरीरी बनने का अभ्यास ज़रूर करो। *जैसे ट्रैफिक कण्ट्रोल का रिकार्ड बजता है तो वैसे वहाँ कार्य में रहते भी बीच-बीच में अपना प्रोग्राम आपे ही सेट करो तो लिंक जुटा रहेगा। इससे अभ्यास होता जाएगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

_____

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बेहद के बाप से 21 जनमो का पूरा वर्सा लेने के लिए श्रीमत पर जरूर चलना"*

❉ *प्यारे बाबा :-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वर पिता जो धरा पर उतर आये है... तो मीठे सतयुगी सुख हथेली पर उपहार सा भी लाये है... अपने दुखो में कुम्हलाये प्यारे बच्चों को रूहे गुलाब सा बनाने आये है... तो *पिता की श्रीमत का हाथ और साथ कभी न छोडो.*.. और 21 जनमो के असीम सुखो को अपनी बाँहों में भर लो..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा :-* "हाँ मेरे प्यारे बाबा... मैं आत्मा ईश्वरीय पुत्र होने के महाभाग्य को पाने वाली... यादो में खुबसूरत जीवन से सजती जा रही हूँ... मीठे बाबा *21 जनमो का खुबसूरत भाग्य मै आत्मा अपने नाम लिखवाकर कितनी धनवान् हो गई हूँ..*. श्रीमत को दिल मे समाये सदा की खुशनुमा हो रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वरीय मत पर चलकर 21 जनमो के अनन्त सुख अपने दामन पर सजा लो... *श्रीमत को दिल से अपनाकर सतयुगी दुनिया के सहज ही अधिकारी बन जाये.*.. बेहद के बाबा से बेहद के सारे सुनहरे सुख लेकर अपनी बाँहों में समा लो..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा :-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा श्रीमत रुपी हाथो में जनमो के दुःख भरे अहसासो से मुक्त होकर... मीठे 21 जनमो के सुखो से भरती जा रही हूँ... खुशियो में झूमती जा रही हूँ... और *संगम पर भाग्यशाली जीवन का भरपूर आनन्द लेती जा रही हूँ..*."

❇ *प्यारे बाबा :-* "मेरे सिकीलधे मीठे बच्चे... हर पल हर कदम पर श्रीमत को अपनाओ, और मीठे बाबा के दिल में मणि से बस् जाओ... *21 जनमो की मीठी खुशियां अपने भाग्य में सजा लो*... मीठे बाबा की यादो में जीवन सुखो का पर्याय बनाकर सदा के सुखो से भरपूर हो जाये..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा :-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा ईश्वरीय यादो में कितनी भरपूर मालामाल हो गयी हूँ... *मीठे बाबा श्रीमत ने जीवन को कितना हल्का, प्यारा, और मीठा बना दिया है.*.. मै आत्मा आपकी यादो में डूबकर, कितनी निश्चिन्त बेफिक्री से भर गयी हूँ..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सच्चे - सच्चे ब्राह्मण बन रूद्र ज्ञान यज्ञ की संभाल करनी है*"

➳ _ ➳ कर्मयोगी बन कर्म करते करते मैं बाबा के गीत सुन रही हूं। तभी गीत में एक पंक्ति आती हैं:- "बच्चो में संकल्प जो आये, वरदाता ही भागे आये"। गीत की इन पंक्तियों को सुनते ही मन में अपने शिव पिता परमात्मा से मिलने का संकल्प उतपन्न हो उठता है और *अपने शिव पिता परमात्मा से मिलने की इच्छा मन मे लिए, अशरीरी स्थिति में स्थित हो कर, मैं अपने मन बुद्धि को अपने शिव पिता परमात्मा पर एकाग्र करके उन्हें अपने पास आने का आग्रह करती हूं* और देखती हूँ परमधाम से एक चमकता हुआ ज्योतिपुंज नीचे की ओर आ रहा हैं जिसमे से अनन्त शक्तियों की किरणें निकल - निकल कर चारों और फैल रही हैं।

➳ ➳ धीरे - धीरे वह ज्योतिपंज सक्ष्म लोक में पहंच कर ब्रह्मा तन में

प्रवेश कर जाता है और कुछ ही क्षणों में मैं अपने परमप्रिय परम पिता परमात्मा को उनके आकारी रथ के साथ अपने सम्मुख पाती हूँ। अब मैं देख रही हूं बापदादा को अपने सामने। *उनके आने से वायुमण्डल में चारों ओर जैसे एक रूहानी मस्ती छा गई है। उनसे आ रही शक्तिशाली किरणे मुझ पर पड़ रही है और उन शक्तिशाली किरणों का औरा मुझे विदेही स्थिति का अनुभव करवा रहा है*। मेरा साकार जैसे जड़ हो गया है और उसमें से एक लाइट का सूक्ष्म आकारी शरीर बाहर निकल आया है।

➳ _ ➳ अपने इस सूक्ष्म आकारी लाइट के फरिश्ता स्वरूप में मैं स्वयं को बहुत ही हल्का अनुभव कर रही हूँ। बापदादा बड़े प्यार से मुस्कराते हुए अपना हाथ मेरी और बढ़ा रहे हैं। बाबा के हाथ मे जैसे ही मैं अपना हाथ रखती हूं।बाबा मेरा हाथ थाम कर मुझे इस साकारी दुनिया से लेकर दूर चल पड़ते हैं। *हर प्रकार की भीड़ - भाड़ से अलग एक बहुत बड़े खुले स्थान पर बाबा मुझे ले आते हैं। बड़े प्यार से मैं बाबा को निहारते हुए इस अलौकिक मिलन का आनन्द ले रही हूं*। तभी अचानक मैं देखती हूँ वो पूरा खुला स्थान जैसे एक बहुत बड़ा कुंड है और उस कुंड में अग्नि की विशाल लपटे निकल रही हैं जो आसमान को छू रही हैं। हैरान हो कर मैं बाबा की ओर देखती हूँ।

➳ _ ➳ बाबा मेरा हाथ थामे मुझे उस कुंड के बिल्कुल नजदीक ले आते हैं। मनमनाभव का मंत्र दे कर बाबा मुझे उस स्थिति में स्थित करके, अपनी शक्तिशाली किरणे मुझ पर प्रवाहित करने लगते हैं। *मैं देख रही हूं बाबा के मस्तक से, बाबा की दृष्टि से शक्तियों की जवालस्वरूप धाराओं को निकलते हुए*। इन जवालस्वरूप धाराओं रूपी योग अग्नि से निकल रही ज्ञान और योग की पावन किरणे अब मुझ पर पड़ रही हैं और मेरे अंदर से 5 विकारों के भूत एक - एक करके बाहर निकल रहें हैं और इस योग अग्नि में जल कर स्वाहा हो रहें हैं। *इन भूतों के स्वाहा होते ही मेरा स्वरूप जैसे बदल रहा है*। मैं दैवी गुणों से सम्पन्न होने लगा हूँ।

➳ _ ➳ अब मेरे मन की सारी दुविधा मिट चुकी है। मैं जान गई हूं कि यह विशाल कुंड बेहद का रुद्र ज्ञान यज्ञ है जो परमात्मा ने स्वयं आ कर रचा है। *इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से प्रज्ज्वलित होने वाली विनाश ज्वाला में सारी परानी

दुनिया, पुराने संस्कार जल कर भस्म हो जाएंगे और उसके बाद नया दैवी स्वराज्य स्थापन हो जाएगा*। जहां सभी दैवी गुण वाले मनुष्य अर्थात देवी देवताओं का राज्य होगा। लेकिन देवी देवताओं की इस दुनिया के आने से पहले परमात्मा द्वारा रचे इस रुद्र ज्ञान यज्ञ की सम्भाल करना मेरी जिम्मेवारी है। इस जिम्मेवारी को पूरा करने के लिए मैं फ़रिशता अब अपने ब्राह्मण स्वरूप में लौट आता हूँ।

➳ _ ➳ बाबा की श्रीमत पर चल कर, बाबा द्वारा रचे इस अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ की बड़े प्यार से और सच्चे दिल से संभाल करना ही अब मेरे इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है। और इस लक्ष्य को पाने के लिये अब मैं अपना तन - मन - धन ईश्वरीय यज्ञ में लगा कर सम्पूर्ण समर्पण भाव इस यज्ञ को चलाने के निमित बन गई हूं। *परमात्मा बाप द्वारा रचे हुए इस अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ में सहयोगी बनने के लिए बाप से मैंने जो पवित्रता की प्रतिज्ञा की है उस प्रतिज्ञा को मन, वचन, कर्म से पूरा करने के पुरुषार्थ में अब मैं सदा तत्पर रहती हूं*। मनसा-वाचा-कर्मणा अपवित्रता का अंश भी मुझमे ना आये इस बात पर पूरा अटेंशन देते हुए, यज्ञ रक्षक बन यज्ञ की सच्चे दिल से मैं सम्भाल कर रही हूं।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं सतगुरु द्वारा प्राप्त हुए महामन्त्र की चाबी से सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्मा हूँ।

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा संगठन में ही स्वयं को सेफ रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा संगठन के महत्व को जानकर महान बन जाती हूँ ।*
✺ *मैं सदा सहयोगी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ जब कोई विध्न आता है, तो विघ्न आते हुए यह भूल जाते हो कि *बापदादा ने पहले से ही यह नॉलेज दे दी है कि लगन की परीक्षा में यह सब आयेंगे ही।* जब पहले से ही मालूम है कि विघ्न आने ही हैं, फिर घबराने की क्या जरूरत?

➳ _ ➳ विघ्नों के कारण का नहीं सोचो लेकिन बापदादा के यह महावाक्य याद रखो कि जितना आगे बढ़ेंगे उतना माया भिन्न-भिन्न रूप से परीक्षा लेने के लिए आयेगी और यह *परीक्षा ही आगे बढ़ाने का साधन है* न कि गिराने का। *कारण सोचने के बजाए निवारण सोची, तो निर्विघ्न हो जायेंगे।* क्यों आया? नहीं, लेकिन यह तो आना ही है-इस स्मृति में रहो तो समर्थी स्वरूप हो जायेंगे।

✺ *"ड्रिल :- परीक्षा को आगे बढ़ाने का साधन अनुभव करना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा देख रही हूँ चारों ओर दुनिया निराश, हताश, दुःखी है... कोई भी परिस्थिति आते ही घबराकर उसके कारण का निवारण न ढूंढ़ एक दूसरे को दोषी ठहरा रहे है... परमात्मा को ही नही छोड़ते उसे भी कोसने लगते हैं... कि मेरे साथ ही ऐसा क्यूं... भला बुरा कहने लगते है कि मैंने क्या बिगाड़ा आपका... मुझ आत्मा की खुशी व हिम्मत देखकर मुझसे पूछ रहे हैं आपको कौन मिला है *जो हर परिस्थिति में सदा खुश रहते हो*... मैं आत्मा मन ही मन उन्हें शुभ भावना शुभ कामना देती हूँ व कहती हूँ... *उठो जागो स्वयं परमपिता परमात्मा इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं... आओ अपने सच्चे परमपिता परमात्मा को व स्वयं को जानो... सच्चे परमपिता परमात्मा से मिलन मनाओ*... सच्चे पिता का हाथ व साथ पाकर अपने जीवन की हर परीक्षा को खेल समझ व आगे बढ़ने का साधन अनुभव करो...

➳ _ ➳ मुझ ब्राह्मण आत्मा को स्वयं भगवान ने चुना है... प्यारे परमपिता परमात्मा ने सही राह दिखाई है... जिसका हाथ स्वयं ईश्वर ने पकड़ा है... ईश्वर ने सम्भाला है... मुझ आत्मा के जीवन की डोर स्वयं भगवान ने सम्भाली है... कोई भी परिस्थिति या पेपर आने पर स्वयं ही स्मृति आ जाती है कि मेरा साथी कौन है... *स्वयं भगवान मेरा साथी है तो मुझ आत्मा का अकल्याण तो है ही नही सकता*... इस ड्रामा के अंतिम सीन तक बाबा और मैं साथ साथ है... और साथ साथ ही रहेंगे... ज्ञानसागर मीठे बाबा ने नॉलेज देकर मुझ आत्मा को नॉलेजफुल बना दिया है... कि इस *लगन में विघ्न तो बहुत आऐंगे ही पर विघ्नों से घबराने की जरुरत नही है*... बस मैं आत्मा *एक बल एक भरोसा* से सदा आगे बढ़ती जा रही हूँ... हर पल हर कदम पर बाबा का साथ अनुभव कर रही हूं...

➳ _ ➳ *विजय मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है... ईश्वर मेरा साथी है*... हर परिस्थिति में हर पेपर में मैं आत्मा अनुभव करती हूं कि बाबा आप मेरे साथ खड़े हो... *बाबा से निरंतर आती शक्तिशाली किरणों का जाल मेरे चारों ओर है... ये निश्चय मुझ आत्मा को हर पेपर में आगे बढ़ाता है*... जैसे बच्चे का पेपर होता है तभी वो पास होकर अगली कक्षा में जाता है... ऐसे ही माया भी अलग अलग रुप में आती है पेपर लेती है... मैं आत्मा बापदादा की हजार भजाओं की छत्रछाया में रह अपने पेपर में पास होती आगे बढ रही हूँ... और

परीक्षाओं को परिस्थितियों को साइड सीन समझ और आगे बढ़ने का साधन अनुभव कर रही हूं... निश्चय का फाउंडेशन पक्का कर रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्वयं पर, बाबा पर, ड्रामा पर निश्चय रख हर परिस्थिति में कल्याण छिपा है ऐसा निश्चय रख आगे बढ़ती जा रही हूँ... *जितना आगे बढ़ेगे तो पेपर भी उतने ज्यादा आयेंगे*... मैं आत्मा बाबा के महावाक्यों को स्मृति में रख पेपर को आगे बढ़ने का साधन अनुभव कर रही हूँ... मैं आत्मा पेपर आने को गुडलक समझ रही हूँ... *मैं आत्मा एक बाप की याद में रह अंगद समान अपनी स्थिति अचल अडोल रख हर पेपर को पार करती आगे बढ़ने का साधन अनुभव कर रही हूँ*...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔